भाग 1: रोना और पोषण पाना

हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के सामर्थी और अतुलनीय नाम में आप सबको नमस्कार। उसी को अब और सदा-सर्वदा महिमा और आदर मिले। आमीन।

यह शिक्षा-श्रृंखला उन लोगों के लिए विशेष रूप से तैयार की गई है, जिन्होंने हाल ही में प्रभु यीशु पर विश्वास किया है। यदि आप नए विश्वासी हैं — या आपके किसी प्रिय ने हाल ही में यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता स्वीकार किया है — तो ये शिक्षाएं आपके लिए अत्यंत मूल्यवान और उत्साहवर्धक सिद्ध होंगी।

उद्धार का क्या अर्थ है?

जब हम “उद्धार” की बात करते हैं, तो इसका अर्थ है नया जन्म — वह आत्मिक जन्म जिसका उल्लेख यीशु ने यूहन्ना 3:3 में किया है:

“मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, जब तक कोई नये सिरे से जन्म न ले,
वह परमेश्वर के राज्य को देख नहीं सकता।”

यूहन्ना 3:3

यह नया जन्म कई महत्वपूर्ण चरणों को शामिल करता है:

पापों से सच्ची मन-फिरौती और संसार के तरीकों से पूरी तरह मुड़ जाना
(प्रेरितों 3:19)।
डुबकी वाली बपतिस्मा, जो विश्वास और आज्ञाकारिता की सार्वजनिक गवाही है (यूहन्ना 3:23; रोमियों 6:4)।
पवित्र आत्मा को ग्रहण करना (प्रेरितों 2:38), जो विश्वासी के भीतर वास करता है और उसे सामर्थ्य देता है।

ये नींव रखने के बाद व्यक्ति सचमुच नया जन्म लेता है — परंतु यह केवल यात्रा की शुरुआत है।

उद्धार अंत नहीं, प्रारंभ है

दुर्भाग्य से, बहुत से नए विश्वासी सोचते हैं कि पश्चाताप और बपतिस्मा के बाद उनका आत्मिक विकास पूरा हो गया है। वे यहीं रुक जाते हैं, यह समझे बिना कि नया जन्म उन्हें आत्मिक शिशु बनाता है — जीवित, परंतु पोषण और विकास की आवश्यकता के साथ।

आप नया जन्म लेकर भी आत्मिक रूप से अपरिपक्व — या उससे भी बुरा, आत्मिक रूप से अत्यंत निर्बल — रह सकते हैं, यदि आप बढ़ना शुरू नहीं करते।

जैसे एक नवजात शिशु कमजोर और निर्भर होता है, वैसे ही मसीह में

नए जन्मे लोग भी होते हैं। और जैसे शारीरिक शिशु दो जीवन-चिह्न दिखाते हैं, वैसे ही आत्मिक शिशुओं को भी दो सिद्ध संकेत दिखाने चाहिए:

1. वे रोते हैं।
2. वे पोषण लेते हैं।

आइए इन दोनों पर ध्यान दें।

1. रोना: जीवन का पहला संकेत

जब एक शिशु जन्म लेता है, तो दाई अक्सर उसे हल्के से छूती है ताकि वह रो पड़े। शिशु का रोना महत्वपूर्ण है — यह उसकी जीवित होने और साँस लेने का प्रमाण है। बिना रोए शिशु चिंता का विषय है; रोता हुआ शिशु जीवन का संकेत है।

आत्मिक जीवन भी ऐसा ही है।

जब कोई सचमुच नया जन्म लेता है, तो उसके भीतर आत्मा का एक आत्मिक रोना होता है — परमेश्वर के लिए लालसा, समझने की भूख, उस उद्धारकर्ता को जानने की इच्छा, जिसने उसे छुड़ाया है। नया विश्वासी इसे समझ न पाए, पर परिपक्व विश्वासी इसे पहचान लेंगे।

यह “रोना” इस प्रकार प्रकट होता है:

नियमित रूप से कलीसिया जाने की इच्छा।
प्रार्थना करना सीखने तक बेचैनी।
बाइबल को समझने की भूख।
संगति और आत्मिक मार्गदर्शन की लालसा।

आत्मिक पिता और माताओं का कर्तव्य है कि वे इस रोने को पहचानें और नवजात आत्मा की तरह उसकी जरूरतों का उत्तर दें।

2. पोषण पाना: आत्मिक भोजन की आवश्यकता

रोने के बाद आता है पोषण। एक नवजात शिशु सहज रूप से स्तनपान करना जानता है — कोई उसे नहीं सिखाता। उसी तरह नया विश्वासी स्वाभाविक रूप से परमेश्वर के वचन के दूध की भूख रखता है। बाइबल इसे “आत्मिक दूध” कहती है:

“नवजात बच्चों के समान उस शुद्ध आत्मिक दूध के लिये लालायित रहो, ताकि उसके द्वारा तुम उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ।”

1 पतरस 2:2

यह भोजन अत्यंत आवश्यक है। इसके बिना वृद्धि असंभव है। जो शिशु दूध नहीं पीता, वह कमजोर और असुरक्षित हो जाता है। इसी प्रकार, जो विश्वासी वचन, संगति और आत्मिक शिक्षा से दूर रहते हैं, वे आत्मिक भ्रम, प्रलोभन और धोखे का शिकार हो जाते हैं।

इस सिद्धांत का एक सुंदर उदाहरण मूसा के जीवन में मिलता है।

बाइबिल चित्रण: मूसा का रोना

निर्गमन 2:6 में हम पढ़ते हैं कि मूसा को उसकी माता ने छिपाया, और जब वह उसे अधिक छिपा नहीं सकी, तो उसे एक टोकरी में नदी पर छोड़ दिया। फिरौन की बेटी ने उस टोकरी को पाया — और कुछ महत्वपूर्ण हुआ:

“उसने उसे खोला और बच्चे को देखा, और देखा, वह बालक रो रहा
था। उसे उस पर दया आई और उसने कहा, ‘यह हिब्रियों के बच्चों में से एक है।’”

निर्गमन 2:6

शिशु रो रहा था — और उसका रोना उसके जीवन का कारण बना। वह रोना

फिरौन की बेटी के हृदय को पिघला गया। उसने मूसा की माँ को ही दूध पिलाने वाली के रूप में नियुक्त किया। इस प्रकार मूसा को सुरक्षा, पोषण और बाद में महान उद्धारकर्ता बनने का मार्ग मिला।

यदि मूसा न रोता, तो शायद उसका जीवन वहीं समाप्त हो जाता। परंतु उसके रोने ने उसे भोजन, पालन-पोषण और परमेश्वर की बुलाहट की तैयारी दिलाई।

नए विश्वासी के लिए सावधान करने वाला वचन

यदि आप दावा करते हैं कि आप नया जन्म ले चुके हैं, परंतु:

परमेश्वर की बातों में कोई रुचि नहीं,
प्रार्थना की कोई लालसा नहीं,
वचन के लिए कोई भूख नहीं,
विश्वासियों की संगति में कोई आनंद नहीं,

तो शायद आप आत्मिक रूप से मृत या गहरी नींद में हैं।

एकांत से बचें। अपने प्रार्थना-नेताओं या कलीसिया से दूर न हों। ऐसा न होने दें कि दिन या सप्ताह बीत जाएँ और आप आत्मिक भोजन न लें। निष्क्रियता का कठोरता से विरोध करें।

आप नई सृष्टि हैं (2 कुरिन्थियों 5:17) — अब उसी के समान जीवन जीना शुरू करें।

आत्मिक दूध की भूख रखें। दूसरों के आपको ढूँढ़ने की प्रतीक्षा न करें। जैसे शिशु सहज रूप से रोते और दूध पीते हैं, वैसे ही आपका आत्मिक स्वभाव आपको परमेश्वर की ओर खींचना चाहिए।

“जो वचन की शिक्षा पाता है, वह अपने उपदेशक के साथ सब अच्छी वस्तुओं में सहभागिता करे।”

गलातियों 6:6

अंतिम प्रोत्साहन

प्रिय नए विश्वासी, इन दो महत्वपूर्ण आत्मिक जीवन-चिह्नों को याद रखें:

रोना और पोषण पाना।

परमेश्वर की लालसा करो। उसके वचन की भूख रखो। अपनी आत्मिक

परिवार के निकट रहो।

ये वे प्रारंभिक कदम हैं जो आपको एक मजबूत, फलदायी और परिपक्व मसीही जीवन की ओर ले जाएँगे।

प्रभु आपको बल, बुद्धि और मार्गदर्शन प्रदान करे।

शालोम।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp